1

खिड़की

अंजू खरबंदा

लघुकथा

होशियारपुर से शादी का बुलावा आया था । ट्रेन से जाना तय हुआ। सर्दी हल्की हल्की दस्तक देने लगी थी, इसलिए सोचा– चलो इस बार ए सी के बजाय जनरल कोच से सफ़र का आनंद लिया जाए। पहले बीवी-बच्चे जनरल से जाने पर कुछ नाराज़ हुए, पर फिर थोड़ी ना-नुकुर के बाद मान गए। दिल्ली से लगभग आठ घंटे का सफ़र। सीट बुक थी, तो ज़्यादा परेशानी नहीं हुई। बच्चों ने झट खिड़की वाली सीट झपट ली। सारा सामान सेट कर मैं और पत्नी बातों में मशगूल हो गए।

ए सी के बजाय जनरल कोच से सफ़र का आनंद लेना– इसका मतलब क्या हो सकता है?

"दीदी! जम्मू की शॉल ले लो! बहुत बढ़िया है!"

रंग-बिरंगी शॉलों का भारी गठर उठाए एक साँवली-सलोनी कजरारी आँखों वाली युवती पत्नी को इसरार करने लगी।

"कितने की है?"

"अढ़ाई सौ की!"

"इत्ती महँगी!"

"ज़्यादा पीस लोगी, तो कम कर दूँगी!"

"मुझे दुकान खोलनी है क्या?"

"ले लो न! बहनों और भाभियों के लिए!"

मैंने पत्नी को इशारा किया, तो उसने आँखें तरेरकर मुझे चुप रहने का संकेत दिया।

"अच्छा पाँच पीस लूँ तो कितने के दोगी?"

"दो सौ रुपए पर पीस ले लेना दीदी!"

"न! सौ रुपए पर पीस!"

"दीदी! सौ तो बहुत कम है!" –कहते हुए उसका गला रुँध गया और उसकी कजरारी आँखें भर आईं।

युवती का गला रुँध जाने का कारण क्या हो सकता है?

"वो एक बार में ही डेढ़ सौ में मान गई। गलती की, थोड़ा तोल-मोल और करना चाहिए था!" –इस कथन से लोगों के किस मनोभाव का परिचय मिलता है?

"चल, न तेरी न मेरी, डेढ़ सौ पर पीस!"

"अच्छा दीदी! ठीक है! लो, रंग पसंद कर लो!"

कुछ सोचते हुए उसने कहा और गठर पत्नी के सामने सरका दिया। पत्नी ने पाँच शॉलें अलग कर लीं और मेरी ओर देख रुपए देने का इशारा किया।

मैंने झट 750 रुपए निकालकर दे दिए।

उसके जाने के बाद रास्ते भर पत्नी की सुई इसी बात पर अटकी रही– "वो एक बार में ही डेढ़ सौ में मान गई। गलती की, थोड़ा तोल-मोल और करना चाहिए था!"

और मेरी सुई... अतीत में जा अटकी थी ।

बेटी को गोद में बिठा रेलगाड़ी की खिड़की से झाँकता मैं सोच रहा था– मेरे पिता भी रेलगाड़ी में सामान बेच जब थके-हारे घर आते, तो उनकी आँखों में भी वही नमी थी, जो आज उस युवती की आँखों में थी।

"उनकी आँखों में भी वही नमी थी, जो आज उस युवती की आँखों में थी।" लेखक के पिताजी और उस युवती में कौन-सी समानता हो सकती है?

अंजू खरबंदा

जन्म : 31 अक्तूबर 1971

अंजू खरबंदा का जन्म दिल्ली में हुआ। वे अध्यापिका, लेखिका तथा रेडियो कलाकार हैं। लघुकथा, कविता, संस्मरण आदि विधाओं में वे कार्यरत हैं। 'उजली होती भोर', 'किंग्ज़वे कैम्प दिल्ली-9' आदि प्रकाशित कृतियाँ हैं। सावित्री बाई फूले सम्मान से वे पुरस्कृत हैं।

गतिविधियाँ

» **कहानी पढ़ें और रिक्त स्थान की पूर्ति करें :**

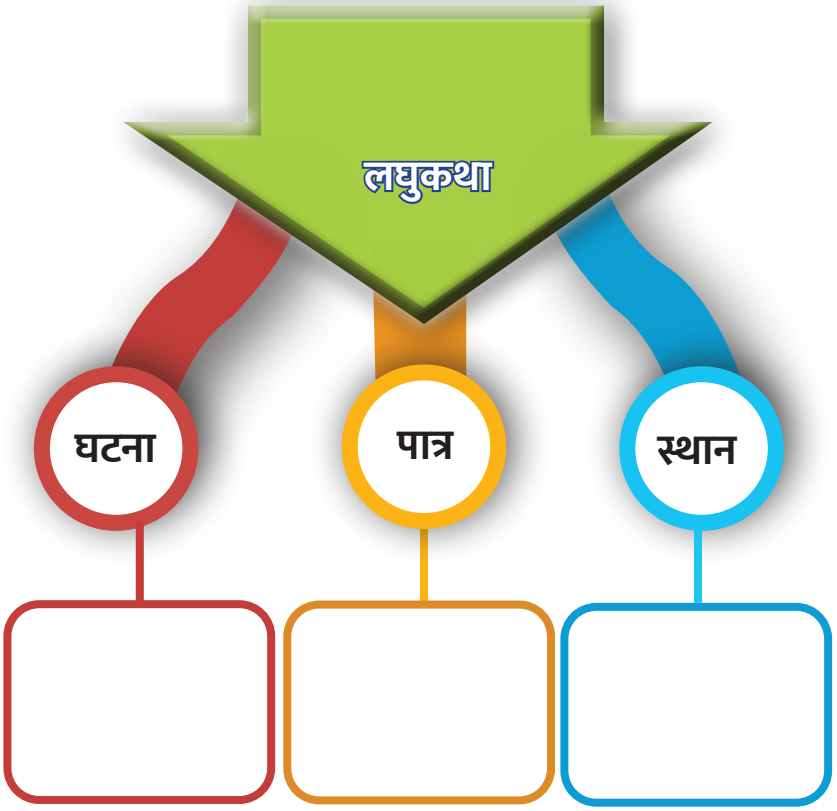

» **नमूने के अनुसार वाक्यों को बदलकर लिखें :**

शादी का बुलावा **आया**।	शादी का बुलावा **आया था**।
पत्नी बातों में मशगूल हो **गई**।	पत्नी बातों में मशगूल हो **गई थी**।
.....	लड़का बेंच पर बैठा था।
.....	मीनू बाज़ार की ओर चली थी।
.....	.....
.....	.....

» रेलगाड़ी के अनुभव ने पति को अपने पिता की याद दिलाई। उसकी डायरी लिखें।

» कहानी की 'खिड़की' अनेक आशयों का सूचक है। समझाएँ।

» कहानी के लिए और एक शीर्षक सुझाएँ। उसका औचित्य भी बताएँ।

अनुबद्ध कार्य

» कहानी का ऑडियो टेक्स्ट तैयार करें।

मदद लें :

बुलावा	-	निमंत्रण
सर्दी दस्तक देना	-	सर्दी का अनुभव होना
ना-नुकुर	-	असहमति
सीट झपट लेना	-	सीट पकड़ लेना
मशगूल होना	-	लीन होना
गठर	-	बड़ी गठरी, big bundle
साँवली	-	श्याम रंग की
सलोनी	-	सुंदर
कजरारी आँखें	-	काजल लगी आँखें
इसरार करना	-	आग्रह करना
अढ़ाई सौ	-	ढाई सौ (250)
इत्ती	-	इतनी
इशारा करना	-	संकेत करना
आँखें तरेरना	-	क्रोध से देखना
गला रुँध जाना	-	रोने को आना
सुई अटकना	-	ध्यान केंद्रित होना
खिड़की से झाँकना	-	खिड़की से बाहर देखना